minute or niero study) के लिए क्षेत्रीय अध्ययन के सिद्धांतों को भूगोल का अनिवार्य अंग माना। वर्तमान में इस चिंतन को हार्टशोर्न ने विकसित किया।

6.3.4 रेटजेल और राजनैतिक भूगोल [Ratzel and political Geography]

रेटजेल ने अपने दूसरे बड़े ग्रंथ राजनीतिक भूगोल (Politische Geographiat 1897) में Anthropogeography के सिद्धान्तों को लागू किया। इसमें पृथ्वीतल और राज्यों के बीच के संबंधों का तुलनात्मक अन्वेषण किया। उन्होंने विकासवादी जीव विज्ञान (evolutionary biology) के प्रभावों का प्रयोग करते हुए राज्य तथा समाज के अंगवादी सिद्धांत (Organic Theory of State and Society) को प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार राज्य एक जीवित संस्था होती है, जिसमें भूमि का खण्ड और मानव जाति का खण्ड (piece of earth and a piece of humanity) होता है। विभिन्न राज्य अपने भौतिक साधनों के अनुसार अपने इतिहास और मानव जातिशास्त्र (ethnography) का विकास करते हैं।

'राजनीतिक भूगोल' के एक भाग में राज्य के अंगवादी सिद्धांत (Organic Theory of State) का विकास और शेष पुस्तक में राजनीतिक इकाइयों की उत्पत्ति और विशेषताओं की क्रमबद्ध और समीक्षात्मक विवेचना, उन राज्यों की पृथ्वीतल पर स्थितियों (positions), उनके आकारों (sizes), राज्य सीमाओं, समुद्र से संबंधों आदि तथ्यों के संदर्भ में की गई है।

उनकी उपर्युक्त संकल्पनाओं में Lebensraum की विचारधारा सामने आई। जिसका शाब्दिक अर्थ है–"Geographical area within which living organism develop." या संक्षेप में 'Living Space'। उनके अनुसार मानव-समूह की निवास की सीमा में Lebarraum सामान्य एवं प्राकृतिक दो प्रकार का होता है। स्मिथेनर ने इसे वास्तविक एवं राजनैतिक लेबेनसोम और होशोफर ने मानव की अपने निवास-क्षेत्र के बाहर सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्रियाएँ बताया। जर्मनी में यह राजनैतिक सिद्धांत पूर्णतया नवीन एवं सार्थक सिद्धांत साबित हुआ। इसका विकसित रूप 'हृदय प्रदेश' एवं 'विश्व द्वीप' के रूप में हिटलर के सामने आया। किसी क्षेत्र की जटिल व्यवस्था में लेबेनसोम को मानवीय-राजनैतिक (Anthro-political) संगठन की एक इकाई माना गया, जिसका संबंध विभिन्न राजनैतिक संगठनों की व्यवस्था एवं उनकी सफल क्रियाशीलता से है।

सांस्कृतिक दृश्यभूमि की संकल्पना–ऐसी दृश्यभूमि का विकास 'मानव द्वारा भूतल का ऐतिहासिक कालों से निवास के कारण हुआ है। जिस कारण उन्होंने इसके लिए 'ऐतिहासिक दृश्यभूमि' शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सांस्कृतिक भौगोलिक इकाई के अंतर्गत विशिष्ट जनसमूह के सांस्कृतिक परंपराओं की एकत्र धारणाओं को महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए। इसे समझने के लिए जनसंख्या विशेषज्ञों को मानचित्रों की सहायता लेनी चाहिए।

इस तरह राजनैतिक भूगोल का विकास करने के कारण उन्हें 'राजनैतिक भूगोल का पिता' कहा जाता है।

रेटजेल ने इससे निकट के विषयों-सांस्कृतिक भूगोल, नगरों एवं बंदरगाहों की महत्ता, उनकी पृष्ठभूमि एवं उनके नवीन स्वरूप आदि पर रखकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने भौतिक भूगोल के क्षेत्र में भी अनुसंधान किए। इसमें अधिक रूचि होने के कारण जब उन्होंने मानव भूगोल का वर्णन किया, तब 'वातावरण की शक्तियों' को सदा ध्यान में रखा। उनकी 'पार्थिव सत्यता' (Terrestrial Reality) का ज्ञान बहुत ऊँचा और दृष्टि एक सच्चे प्रकृतिवादी की रही।

6.4 निष्कर्ष (Summing-up)

मानव भूगोल व राजनैतिक भूगोल में उनकी देन अतुलनीय है। मानव भूगोल एवं उसकी शाखाओं [राजनैतिक, सांस्कृतिक, राज्यों का भौगोलिक-जैविक सिद्धांत, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, क्षेत्रों का सूक्ष्म अध्ययन] के प्रारंभिक विकास की दृष्टि से वे अकेले सबसे महत्वपूर्ण अग्रणी विद्वान रहे। मानव भूगोल, जैव भूगोल, प्रजाति भूगोल एवं भौतिक भूगोल की कुछ शाखाओं में उनकी देन तथ्यात्मक, व्यवस्थित एवं मूलतः नवीन होने से भी महत्त्वपूर्ण बनी रही। शोध हेतु प्रोत्साहन देते हुए रेटजेल ने भूगोल के भौतिक पक्षों पर अत्यधिक बल दिए जाने ी प्रवृत्ति को कम करके भूगोल का एक संतुलित दृष्टिकोण स्थापित किया। ब्रूँस के अनुसार, रेटजेल नवीन विचारों के जनक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी महानता इसी में है कि उन्होंने भूगोल का विधितंत्र विकसित करने के साथ-साथ उसमें नए विचारों का भी प्रतिपादन किया। उन्हें प्राकृतिक निश्चयवादी कह सकते हैं।

6.5 व्यवहृत शब्दावली (Key words used)

एन्थ्रोपोज्यॉग्राफी (Anthropogeography)—मानवीय भूगोल की केंद्रीय विचारधारा नहीं है कि मानव अपने वातावरण का प्राणी है। प्राकृतिक वातावरण की शक्तियाँ ही मानव-जीवन को ढालती है।

क्रमबद्ध विधि (Systematic Method)—इसमें भूतल पर विकसित एवं विकासशील तत्त्वों का प्रकरणवार (Topicwise) अध्ययन किया जाता है।

प्रादेशिक विधि (Regional Method)—इसमें पृथ्वी तल का अलग-अलग प्रदेशों के रूप में अध्ययन होता है।

ईश्वरीय उद्देश्यवाद—इसके अनुसार पृथ्वी की रचना ईश्वर ने उद्देश्यपूर्वक कुछ नियमों के अंतर्गत की है।

वातावरण-निश्चयवाद—इसके अनुसार 'मानव का विकास उसके वातावरण के द्वारा होता है।'

सांस्कृतिक दृश्यभूमि (Cultural Landscape)—दृश्यभूमि का वह पक्ष जो मानवीय उपस्थिति और मानवीय क्रिया के द्वारा निर्मित होता है, सांस्कृतिक दृश्यभूमि कहलाता है।

6.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

6.6.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]

1. फ्रेडरिक रेटजेल का संक्षिप्त परिचय दें।
2. रेटजेल की रचनाओं के बारे में बताएँ।
3. रेटजेल को 'मानव भूगोल का जन्मदाता' कहा जाता है। क्यों?
4. रेटजेल का राजनीतिक भूगोल के विकास में क्या योगदान है?
5. लेबेनस्रोम की संकल्पना क्या है?

1.6.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]

1. भूगोल के विकास में रेटजेल के योगदान की समीक्षा कीजिए।

2. भूगोल के मानवीय पक्ष को सबलता से प्रस्तुत करने में रेटजेल मूलतः अनसंधानकर्ता एवं विशिष्ट व्याख्या प्रस्तुत करनेवाला विद्वान माना जाता है। इसकी विवेचना कीजिए।

6.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. भौगोलिक चिंतन एवं तीन दक्षिणी महाद्वीप - डा० मामोरिया एवं जैन
2. भौगोलिक विचारधाराएँ एवं विधितंत्र - एस० डी० कौशिक
3. भौगोलिक चिंतन का विकास : एक ऐतिहासिक समीक्षा - डा० आर० टी० घोष
4. Geographical Thought - Dr. Sudeepto Adhikari

●●●

पाठ–7 भूगोल में ब्लाश का योगदान

Contribution of Blache in Geography

पाठ–संरचना (Lesson-Structure)

7.0 उद्देश्य (Objective)

7.1 परिचय (Introduction)

7.2 ब्लाश की जीवनी (Life History of Blache]

7.3 ब्लाश की देन (Contribution of Blache]

7.3.1 ब्लॉश की रचनाएँ (Literary Works of Blache)

7.3.2 भूगोल के विशिष्ट लक्षण (Special Features of Geography)

7.3.3 संभववादी चिंतन (Possibilism)

7.3.4 सार्वभौमिक एकता अथवा अंत:संबंध का सिद्धांत (The Principle of Terrstrial Unity or Interconnection)

7.4 निष्कर्ष [Summing up]

7.5 व्यवहृत शब्दावली [Key Words Used]

7.6 अभ्यासार्थ प्रश्न [Questions for Exercise]

7.6.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]

7.6.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]

7.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

7.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य विद्यार्थियों को पॉल बाइडल डी ला ब्लाश के द्वारा भूगोल में योगदान के विषय में जानकारी प्रदान करनी है। इस पाठ को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी जान जाएँगे कि–

1. ब्लाश कौन हैं
2. उनकी जीवनी और रचनाएँ कैसी है
3. ब्लाश के अनुसार भूगोल के विशिष्ट लक्षण क्या है
4. संभववादी चिंतन क्या है
5. भूगोल में ब्लाश की क्या देन है

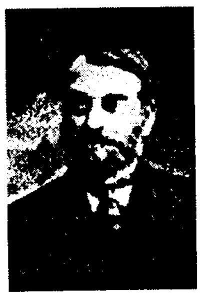

[1885–1918]

7.1 परिचय (Introduction)

फ्रांस में आधुनिक भौगोलिक चिंतन के विषय में पॉल बाइडल डी ला ब्लाश एक अकेले विद्वान हैं जिनकी भूमिका केंद्रीय महत्त्व की है। उन्होंने फ्रांस में मानव केंद्रित आधुनिक भौगोलिक चिंतन की एक नई धारा की नींव डाली, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के समय तक देश में भौगोलिक चिंतन की मुख्य धारा के रूप में स्थापित रही। अन्य किसी देश में भौगोलिक चिंतन का विकास इस सीमा तक एक ही व्यक्ति पर केन्द्रित नहीं रहा, जितना कि फ्रांस में वे सम्भववाद की विचारधारा के मुख्य प्रवर्तक हैं। फ्रांसीसी भूगोल के विकास में इसी कारण ब्लाश को वहाँ का अधिष्ठाता या अग्रणी विद्वान माना जाता है।

7.2 ब्लाश की जीवनी (Life History of Blache)

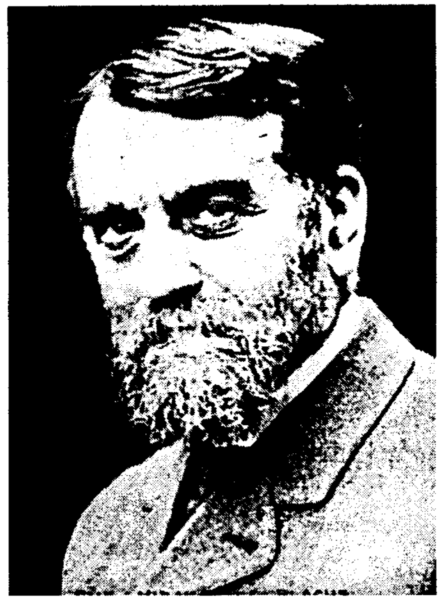

ब्लॉश का जन्म 22 जनवरी 1845 में पेरिस में हुआ। बचपन से ही पढ़ाई में अव्वल आने के लिए वे जाने जाते रहे। उनके पिता ने खुद उन्हें साहित्य एवं भाषा (Literature and Language) की शिक्षा दी तथा उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। 13 वर्ष की उम्र में उन्हें पेरिस के Lyee Charlewague Institution में भेज दिया गया जो उत्तम विद्यार्थियों के आवासीय विद्यालय के रूप में प्रसिद्ध था। वहाँ उन्हें शास्त्रीय एवं साहित्यिक विषयों पर अच्छी पकढ़ हो गई। फिर उन्होंने स्नातक स्तर तक की शिक्षा पेरसि के ही Ecele Narmale Superieure, जो एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कॉलेज था, से प्राप्त की। यहाँ उन्होंने इतिहास, भूगोल एवं दर्शनशास्त्र विषयों में काफी उच्च अंक प्राप्त हुए।

यहाँ से पास करने के बाद वे Ecole Francaise d'Athens में तीन वर्षों तक यूनानी पुरातत्त्व विज्ञान (Greek archeology) का अध्ययन करते रहे। कुछ समय तक एथेंस में अध्यापन कार्य करके वे पुनः 1872 में अपना शोध प्रबन्ध पूरा करने के लिए पेरिस लौट आए। वहाँ यूनान की प्राचीन सभ्यता से विशेष प्रभावित हुए और Ph.D. के लिए शोध हेतु प्लेटो से टॉलेमी के काल तक की उपलब्धियों का अध्ययन करने के लिए पुनः यूनान (Greece) गए। उनके भौगोलिक चिंतन पर इस अध्ययन का गहरा प्रभाव पड़ा। वे कभी भी रेटजेल की तरह कठोर नियतिवादी नहीं बन सके। Ecole Norwale से ही उन्हें डाक्टरेट की उपाधि मिली। 1872 में उनकी नियुक्ति नान्सी विश्वविद्यालय में भूगोल के व्याख्याता पद पर हुई जहाँ वे 1877 तक रहे। 1876-77 में वे जर्मनी भी गए, जहाँ रिटर हम्बोल्ड्ट एवं रेटजेल के कार्यों का अध्ययन करने के साथ-साथ उनकी भेंट वॉन रिचथोपन से भी हुई। वहाँ से लौटने के बाद 1877 में उनकी नियुक्ति 'Ecole Nermale Superieure' के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, पेरिस में हुई। 1998 के पेरिस विश्वविद्यालय में मानव अध्ययन के लिए प्रसिद्ध संस्थान सारबोन में वे भूगोल व इतिहास विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। इस पद को शीघ्र ब्लाश के प्रयासों से पूरी तरह 'Chair of Geography' मान लिया गया। उन्होंने समय-समय पर फ्रांस के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा की एवं वहाँ के भौगोलिक परिवेश का प्रादेशिक विभाजन किया। सोरबॉन-पेरिस में जीवनपर्यन्त भौगोलिक विधि तंत्र चिन्तन एवं संकल्पनाओं के विकास हेतु निरन्तर कार्य करते रहे। उन्होंने भूगोल के प्रादेशिक अध्ययन पर बल दिया जिसके अंदर किसी क्षेत्र के भौतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों के प्रभावों का स्पष्टीकरण किया जाना आवश्यक बतलाया।

ब्लाश के प्रयास से फ्रांस में धीरे-धीरे स्वतंत्र भूगोल विभागों एवं विभागाध्यक्षों की स्थापना हुई। सोरवॉन अपने बीस वर्षों के प्रयास काल में उन्होंने अनेक शिष्यों को प्रेरणा एवं शिक्षा दी, जो बाद में फ्रांस के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भूगोल के व्याख्याता बने।

7.3 ब्लाश की देन (Contribution of Blache)

7.3.1 ब्लाश की रचनाएँ (Literary Works of Blache) :

ब्लाश ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भूगोल पर शोध-पत्र एवं लेख लिखे। उन्होंने 17 ग्रन्थ, 107 पत्र, 240 reviews और Reparts लिखें। उनकी भाषा शैली सरल एवं प्रभावशाली रही। उनकी उल्लेखनीय रचनाएँ निम्न हैं :-

BLACHE

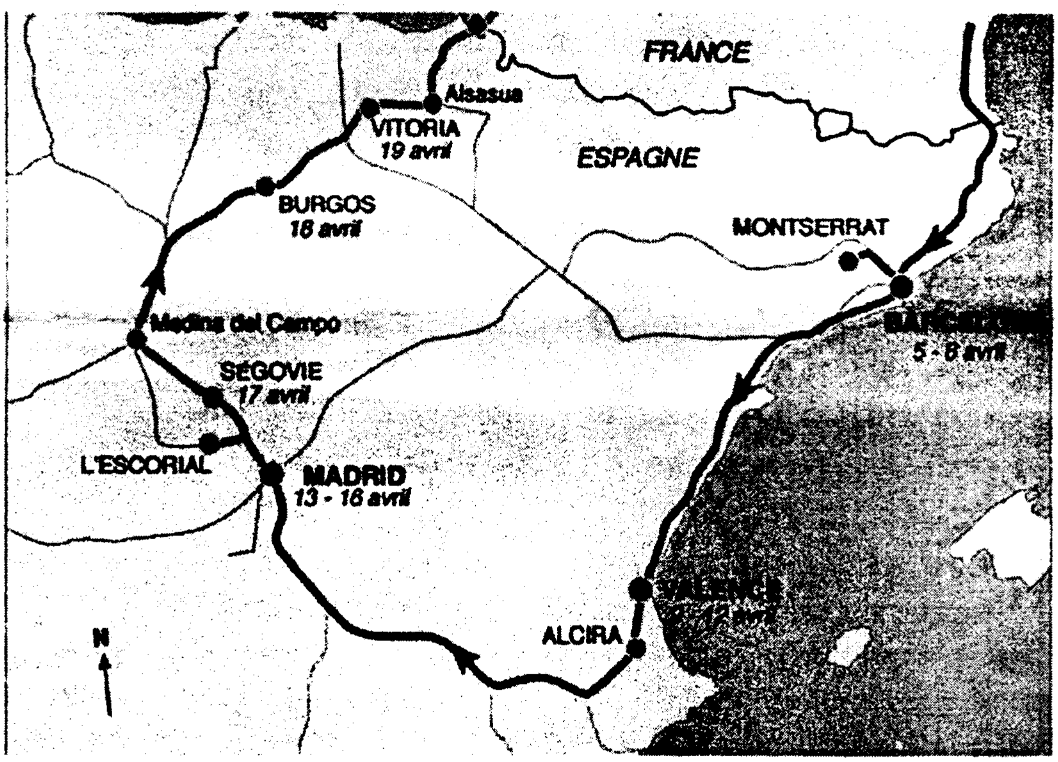

(i) 1889 – प्रथम पुस्तक 'यूरोप के राज्य और राष्ट्र (Etatset Nation de Europe)

(ii) 1894 –यूरोप के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक परिवेश पर तैयार की गयी एक एटलस।

(iii) 1893 – फ्रांस में उन्होंने Annals-de-Geographic (भूगोल की वार्षिक ग्रन्थ माला) का 1893 से जीवनपर्यन्त प्रकाशन लगातार किया। इसमें भूगोल की सभी शाखाओं पर विकासयान चिंतन एवं उदाहरण सहित किए गए खोज कार्यों आदि का विवेचन विभिन्न विद्वानों द्वारा विस्तार से दिया गया है।

(iv) 1903 – फ्रांस का भूगोल (Geographic de la France) - भौगोलिक व साहित्यिक ग्रन्थ।

(v) 1917 – 'पूर्वी फ्रांस का भूगोल' (France de la test)

(vi) 1923 – 'मानव भूगोल के सिद्धांत (Principles of Human Geography) इसका प्रकाशन उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके शिष्य 'डी मार्टोनी' के प्रयास से हुआ।

7.3.2 भूगोल के विशिष्ट लक्षण [Special Features of Geography]

रेटजेल के समकालीन होने के कारण बाइडल डी ला ब्लाश उनके विचारों से काफी प्रभावित रहे, जिससे प्रेरित धारणा ब्लाश द्वारा प्रतिपादित सम्भववाद की आधारभूत मान्यता थी। उन्होंने भूगोल की एकरूपता स्वीकार करते हुए भी प्रादेशिक एवं मानव भूगोल को भूगोल विज्ञज्ञन में उचित स्थान दिया। उनका भौगोलिक चिंतन के विकास में विलक्षण योगदान रहा। उन्होंने Annals में 1913 में भूगोल के विशिष्ट लक्षण पर एक विस्तृत लेख प्रकाशित किया। उन्होंने भूगोल को प्राकृतिक तथा मानव, दोनों विज्ञानों में स्थान देने के लिए विद्वानों का ध्यान निम्नांकित छह मुख्य तथ्यों या लक्षणों की ओर आकर्षित किया-

(i) पार्थिव परिघटनाओं कीएकता (Unity of Earth phenomena) जिसका अर्थ है कि भौतिक कारक (factors) परस्पर एक-दूसरे पर आधारित और संबंधित है।

(ii) पार्थिव घटनाएँ विविधता रूपी योग एवं समायोजन में स्थित है। विभिन्न घटनाक्रमों में विकास एवं परिवर्तन इसी कारण होता है। परिघटनाओं का परिवर्तनशील योग और उनका परिवर्तन संसार की विभिन्न प्रकार की जलवायु में देखा जाता है।

(iii) भूगोल का संबंध पृथ्वी तल पर होनेवाली सभी परिघटनाओं से होता है तथा यह स्थानों का वैज्ञानिक अध्ययन है।

(iv) भूगोल में परिवेश या वातावरण के विभिन्न तत्त्वों का मानव पर प्रभाव का अध्ययन होता है। इसमें विशेषत: जलवायु, धरातल, वनस्पति आदि का प्रभाव महत्त्वपूर्ण है। इन सबसे मानव के सामंजस्य (adjustment) का अध्ययन भी भूगोल में समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।

(v) परिघटनाओं के वर्गीकरण और उनकी व्याख्या करने में वैज्ञानिक विधि (Scientific Method) को अपनाना चाहिए।

(vi) भूगोल में मानव द्वारा भूतल पर लाए गए परिवर्तन एवं उसके महत्त्वपूर्ण कार्यों का सही-सही मूल्यांकन कर उनकी तर्कसंगत स्थिति निश्चित की जानी चाहिए।

उपर्युक्त लक्षणों की ऐसी व्यावहारिक व्याख्या वे 1880 से लेकर अपनी मृत्यु तक अपनी रचनाओं में करते रहे। उनके विचार शुरू से ही परिपक्व और स्पष्ट रहे। वे भौतिक, प्रादेशिक एवं मानव तीनों के समन्वित विकास के पक्षधर रहे। इसलिए उन्होंने पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों, उसकी घटनाओं एवं उन घटनाओं में मानव के योग की स्पष्ट एवं पूर्ण व्याख्या को महत्त्वपूर्ण माना।

वातावरण, मानव एवं सम्भावनाएँ

ब्लाश ने भूगोल के अंतर्गत भौगोलिक वातावरण एवं मानव दोनों का अध्ययन अनिवार्य होगा। इनको अलग रखकर इनकी सही-सही व्याख्या नहीं की जा सकती, क्योंकि दोनों पार्थिव रूप से अन्त: संबंधित हैं। जहाँ प्राकृतिक वातावरण विविध स्तरीय संभावनाओं की ओर मानव को आकर्षित करता है, वहीं मानव स्वेच्छा से अपनी क्षमता एवं आवश्यकता के अनुसार इनको चुनता है। इस प्रकार नियतिवादी चिंतन से खुद को मुक्त रखते हुए 'संभववाद' की ओर निर्भीकता से बढ़ते गए। ब्लाश ने स्पष्ट किया कि मानव भूमि पर आवास के द्वारा अपने से राज्य, इकाई क्षेत्र या प्रदेश को स्वरूपित करता है। ऐसे स्वरूपों के विकास के समझने के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं तात्कालिक परिस्थितियों को भी समझना

आवश्यक है। इसके द्वारा ही पूर्व की प्रवृति की व्याख्या एवं भविष्य का पूर्वानुमान संभव है। संक्षेप में, वे एक व्यावहारिक भूगोलवेत्ता रहे।

7.3.3 संभववादी चिंतन (Possibilism)

संभववाद का तात्पर्य है कि प्रकृति भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में मानव प्रगति के लिए एक निश्चित सीमा के अंदर अनेक संभावनाएँ प्रस्तुत करती है और प्रत्येक समुदाय अपनी तकनीकी क्षमता, अपने संस्कारों और मूल्य बोध के आधार पर अपने विकास का मार्ग स्वयं चुनता है। अत: एक ही प्रकार के वातावरण में भिन्न-भिन्न समुदाय स्थानीय संसाधनों का उपयोग भिन्न-भिन्न प्रकार से करते हुए सर्वथा नए प्रकार के भूदृश्यों का निर्माण करते हैं। रेटजेल की यह्र विचारधारा कि मानव भूगोल के अध्ययन से देशान्तरण की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि भिन्न-भिन्न समुदाय एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए प्रस्थान करते समय अपने सांस्कृतिक मूल्य बोध अपनी स्मृतियों तथा अपनी तकनीक साथ हो जाते हैं, ब्लाश द्वारा प्रतिपादित संभववाद (Possibilism) की आधारभूत मान्यता थी। भौगोलिक अध्ययन में मानव और प्रकृति दोनों के एक साथ समावेश में ब्लाश को कोई विरोधाभाष नहीं दिखाई दिया।

ब्लाश की मान्यता रही कि एक ही प्रकार के पर्यावरण में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते आ रहे सामूहिक प्रयाास के परिणामस्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में निवास करने वाला मानव समुदाय सामाजिक और आर्थिक जीवन की एक विशिष्ट और प्राय: अनूठी पद्धति एक सर्वथा अलग संस्कार और मूल्य बोध विकसित कर लेता है जो कि उस समुदाय की मानसिकता का अभिन्न अंग बन जाता है। जीवन पद्धति और मूल्यबोध की इसी सम्मिलित मानसिकता को ब्लाश ने 'जेनरे कि वाड' (Genre de vie) is a way of living as local culture) का नाम दिया।

ब्लाश का चिंतन प्रारंभ से ही यही रहा है कि मानव स्वयं एक क्रियाशील प्राणी है तथा वह अपने वातावरण/परिवेश का उपयोग स्वयं के अनुभव के आधार पर करता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि :

'Nature is never more than an adviser'.

उनके अनुसार ''समस्त भौगोलिक प्रगति में प्रबल विचारधारा यदि है तो वह है सार्वभौमिक एकता। मानव भूगोल के गोचर पदार्थ अर्थात् मानव रचित दृश्य भूमि सार्वभौमिक एकता से संबंधित है, ... जिसकी रचना स्वयं पृथ्वी के प्रत्येक भाग में भौतिक दशाओं के योग से हुई है। उन्होंने 'वातावरण निश्चयवाद' (Environmental Determinism) की जगह यह विचारधारा प्रस्तुत की। उन्होंने रेटजेल की तरह प्रकृति के आधिपत्य या नियंत्रणकारी प्रभाव को कहीं भी स्वीकार नहीं किया।

प्रदेशों की संकल्पना--ब्लाश ने प्रदेशों की सीमा को अचल या अपरिवर्तनशील नहीं माना। उनके अनुसार अन्तत: प्रदेशों के सीमावर्ती क्षेत्रों में संक्रमण या परस्परव्यापी क्षेत्र हो सकते हैं। ऐसे प्रदेशों का अध्ययन ही उन्होंने व्यावहारिक माना। एक प्रदेश में पार्थिव घटनाओं एवं कारकों की अन्त: निर्भरता की खोज करके उनकी अन्य प्रदेशों की ऐसी घटना एवं कारकों से समता एवं विषमता के आधार पर अन्यों से तुलना की जानी चाहिए। एक प्रदेश के कारकों के प्राकृतिक परिवेश के साथ-साथ वहाँ के निवासियों की परम्पराएँ, तकनीकी कुशलता, अन्य आर्थिक और सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रभाव को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। इनके सहयोग से ही प्रदेश में स्वरूपित लक्षणों को उत्कृष्ट विधि से समझा जा सकता है।

प्रादेशिक अध्ययन–ब्लाश ने किसी भी राजनैतिक इकाई में प्राकृतिक परिवेश की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता के अनुसार विकसित लघु इकाइयों या प्रदेशों का उत्कृष्ट वर्णन किया है। ब्लाश के अनुसार ऐतिहासिक विकास की दीर्घकालिक प्रक्रिया में मानव बसाव वाले सभी क्षेत्रों की अपनी अलग पहचान बन जाती है, उनका अपना विशिष्ट व्यक्तित्व विकसित हो जाता है। पृथक-पृथक् स्थानीय सांस्कृतिक समूहों और सामाजिक गुटों के इस प्रकार से विकसित निवास क्षेत्रों को ब्लाश ने पेयूज (फ्रांसीसी शब्द पेय्साज से बना है-अर्थ है 'ग्रामीण भूट्टश्य') का नाम दिया। ब्लाश के अनुसार इन छोटी-छोटी क्षेत्रीय भूदृश्यावलियों (इकाइयों) का सूक्ष्म विश्लेषण ही भौगोलिक अध्ययन का मुख्य कार्य है। इस प्रकार का अध्ययन ही भूगोल को शास्त्रीय पहचान देता है। उन्होंने ऐसे अध्ययन की आवश्यकता क्षेत्र के भौतिक, ऐतिहासिक एवं आर्थिक तथ्यों के विकास, उनके संबंध और अन्त:निर्भरता का स्वरूप एवं उसमें आनेवाले परिवर्तन (गतिशीलता) को समझने के लिए आवश्यक माना। प्रकृति एवं मानव निर्मित तथ्य एक-दूसरे से अविभाज्य है। क्षेत्रीय अध्ययन को ब्लाश ने 'Annali' के माध्यम से विशेष लेखों द्वारा उद्देश्यपूर्ण बनाने का प्रयास किया।

भौतिक वातावरण–ब्लाश ने भूतल के प्राकृतिक तत्त्वों का अलग से व्यवस्थित अध्ययन नहीं किया फिर भी उन्होंने इनके अध्ययन को भूगोल के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण माना। अत: जब भी भौतिक भूगोल संबंधी कोई मुख्य खोज अथवा रचना उपलब्ध हुई तो उन्होंने उसे 'Annals' में विशेष स्थान दिया। उनका दर्शन बहुमुखी एवं विस्तृत आधार वाला रहा और स्पष्टत: समझाया कि 'भौतिक वातावरण (Physical dullien) जिसका कि निर्माण भूतल के भौतिक तत्त्वों से लेता है, के लक्षणों को समझे बिना उनके प्रभाव के स्तर को स्पष्ट नहीं किया जा सकता। किसी भी प्रदेश के अध्ययन में ऐसे भौतिक तत्त्वों के सम्मिलित प्रभाव को मानवीय तत्त्वों के साथ स्थान मिलना आवश्यक है।

7.3.4 सार्वभौमिक एकता अथवा अन्त:संबंध का सिद्धांत (The Principle of Terrestrial Unity or Inter-connection)

ब्लाश ने 19वी सदी के अंतिम एवं 20वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में इसे सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करते हुए कहा कि मानव भूगोल के तथ्य पार्थिव एकता से ही संबंधित है, जिनकी विवेचना या व्याख्या केवल उन्हीं की सहायता से की जा सकती है। प्रत्येक स्थान पर ये वातावरण से संबंधित है, जो स्वयं कई भौतिक दशाओं के संयोग का परिणाम है। वनस्पति का सामान्य रूप ही किसी प्रदेश का सर्वप्रधान लक्षण है, जिससे उस भू-खंड का सामान्य व्यक्तित्व प्रकट होता है। सामान्य तौर पर किसी भी एक प्रदेश की वनस्पति में समरूपता मिलती है जो पार्थिव एकता का मूर्त्त प्रदर्शन है।

वातावरण के साथ वनस्पति का संयोजन अनेक विधियों से होता है, किंतु समस्त वृक्षों में एक सभ्यता ललित रहत है जो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ती है। इस सिद्धांत के ही विकसित रूप को आज पारिस्थितिकी विज्ञान (Ecology Science) कहते हैं। वातावरण विभिन्न जातियों के प्राणियों पर परस्पर जीवनदायी अंत:संबंध बनाए रखता है। सभी प्राणियों एवं वनस्पतियों ने अपने को वातावरण से समायोजित (adjust) कर रखा है। ऐसा जीव संसार (Ecosystem) कुछ अंशों में परस्पर विरोधी होते हुए भी अपने अस्तित्व के लिए एक-दूसरे पर निर्भर है। इसे 'जीवोम', प्राणी समाज' या 'पशु-साहचर्य' भी कहते हैं। पृथ्वी पर कोई भी वस्तु पूर्णत: स्वतंत्र या स्वावलंबी नहीं है। अत: छोटे-से-छोटे क्षेत्र के भौगोलिक अध्ययन में भी संपूर्णता प्राप्त करने के लिए तथ्यों का एक साथ अध्ययन करना चाहिए। इसे ही पार्थिव संपूर्णता या संपूर्ण ग्लोब की एकता (Unity of the entire globe) कहते हैं।

ब्लाश ने मृत्यु पूर्व 'विश्व का भूगोल' (Geographic Universelle) नामक ग्रंथ लिखते समय एक समन्वित योजना तैयार की। इसी के अनुरूप डिमाजियाँ, मारटोनी एवं ब्रूंस ने अपने अन्य साथियों के सहयोग से इसे बाद में पूरा किया। इसमें 23 खण्ड हैं। इससे भी ब्लाश के अंत तक विकसित समन्वयकारी चिंतन की स्पष्ट झलक मिलती है।

7.4 निष्कर्ष (Summing-up)

फ्रांस में आधुनिक भौगोलिक चिंतन की नई धारा की नींव डालने का श्रेय सिर्फ ब्लाश को है। इनकी अध्ययन पद्धति मूलतया आगमनात्मक और ऐतिहासिक पद्धति थी। वे भूगोल के सैद्धांतिक पक्षों पर हमेशा लेख लिखते रहे। उनके द्वारा प्रतिपादित जीवन धारा केन्द्रित प्रादेशिक अध्ययन पद्धति यूरोपीय इतिहास के औद्योगिक क्रांति के पहले के दौर में प्रचलित सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था की यथार्थपरक अन्तर्दृष्टि पर आधारित है। परन्तु यह परिदृष्टि दुर्भाग्यवश एक ऐसी व्यवस्था के उद्घाटन पर केन्द्रित दृष्टि रही जिसका समय समाप्त हो रहा था। यह अध्ययन पद्धति औद्योगिक क्रांति के पूर्व के यूरोप के ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन के लिए सर्वथा उपयुक्त है और आज भी आवागमन के साधनों से वंचित अविकसित क्षेत्रों (आत्मनिर्भर, जीविकोपार्जन कृषि प्रधान व्यवस्था वाले क्षेत्र) के स्थानीय भूगोल के अध्ययन में सफलता से प्रयोग की जा सकती है। परंतु ऐसे क्षेत्र आज बहुत ह कम है। परिणामस्वरूप ब्लाश की एक समय की बहुत महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि पर आधारित और अत्यधिक सफल अध्ययन पद्धति आज मात्र ऐतिहासिक महत्त्व की रह गई है। परन्तु संभववाद की विचारधारा को आज भी महत्त्व दिया जाता है।

7.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

संभववाद – संभववाद दर्शन का अर्थ है कि पृथ्वी तल पर विभिन्न प्रकार के वातावरण के क्षेत्र है और प्रत्येक क्षेत्र का वातावरण उस क्षेत्र में मानवीय निवास की तथा मानव द्वारा संसाधन उपयोग की कुछ संभावनाओं को प्रस्तुत करता है, उन संभावनाओं का उपयोग मानव अपनी रुचि (choice) के अनुसार करता है।

पार्थिव परिघटनाओं की एकता (Unity of Earth Phenomena)—भौतिक कारक परस्पर एक-दूसरे पर आधारित और संबंधित है।

Genre de vie — Way of living or local culture स्थानीय संस्कृति या रहन-सहन की दशा।

पेयूज (Pays)—पृथक-पृथक स्थानीय सांस्कृतिक समूहों और सामाजिक गुटों के सम्मिलित रूप से विकसित निवास क्षेत्र या ग्रामीण भूदृश्य।

7.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

7.6.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]

1. ब्लाश का संक्षिप्त परिचय दें।
2. 'संभववाद' के बारे में समझाएँ।
3. ब्लाश की रचनाएँ कौन-कौन सी थीं?
4. ब्लाश में भूगोल के कौन से विशिष्ट लक्षण हैं ? बताएँ।

5. ब्लाश द्वारा प्रतिपादित 'प्रदेशों की संकल्पना' क्या है?

6. सार्वभौमिक एकता या अंत:संबंध का सिद्धांत क्या है?

7.6.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]

1. ब्लाश को मानव भूगोल की स्थापना एवं आधुनिक स्वरूप प्रदान करने का श्रेय दिया जाता है। इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

2. फ्रांस में आधुनिक भूगोल के विकास का श्रेय ब्लाश को है। आप इससे कहाँ तक सहमत है? समीक्षा कीजिए।

3. ब्लाश द्वारा भूगोल के विकास में योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

7.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. भौगोलिक चिंतन एवं तीन दक्षिणी महाद्वीप - डा० मामोरिया एवं जैन
2. भौगोलिक चिंतन का विकास : एक ऐतिहासिक समीक्षा - डा० आर० डी० दीक्षित।
3. भौगोलिक विचारधाराएँ एवं विधितंत्र - एस० डी० कौशिक
4. Geographical Thought - Dr. Sudipto Adhikari

●●●

भूगोल में एलेन चर्चिल सेम्पल का योगदान

Contribution of Ellen Churchill Semple in Geography

पाठ-संरचना (Lesson-Structure)

8.0 उद्देश्य (Objective)

8.1 परिचय (Introduction)

8.2 सेम्पल की जीवनी (Life History of Semple]

8.3 सेम्पल का भूगोल में योगदान (Contribution of Sample in Geography]

8.3.1 सेम्पल की रचनाएँ (Literary Works of Semple)

8.3.2 सेम्पल का भौगोलिक चिंतन (Geographical Thought of Semple)

8.3.3 निश्चयवादी चिंतन (Deterministic View)

8.4 निष्कर्ष [Summing up]

8.5 व्यवहृत शब्दावली [Key Words Used]

8.6 अभ्यासार्थ प्रश्न [Questions for Exercise]

8.6.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]

8.6.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]

8.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

8.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य विद्यार्थियों को अमेरिकन भूगोलवेत्ता एलेन चर्चिल सेम्पल का भूगोल में योगदान के विषय में जानकारी प्रदान करनी है। इस पाठ को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी जान पाएँगे कि–

1. सेम्पल कौन हैं और इनका जीवन वृत्तांत क्या है,
2. इनकी मुख्य रचनाएँ कौन-सी है,
3. इनका निश्चयवाद में क्या भूमिका है,
4. भूगोल में इनका क्या योगदान है।

8.1 परिचय (Introduction)

बीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में भौगोलिक अध्ययन के प्रचार-प्रसार में एलेन चर्चिल सेम्पल की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। ये अपने समय की अग्रणी इतिहासकार और भूगोलविद् हैं। भौगोलिक चिंतन के अमेरिकी इतिहास में इनका महत्त्व इस बात में निहित है कि इन्होंने अपनी पुस्तकों और व्याख्यानों के